प्रातः सभा 9/1/69 ओम शान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओम शान्ति। बाप इस शरीर द्वारा समझाते हैं, इनको जीव कहा जाता। इनमें आत्मा भी है और तुम बच्चे जानते हो परमात्मा भी है। यह तो पहले2 पक्का होना चाहिए। इसलिये इनको दादा भी कहते हैं। यह तो बच्चों को निश्चय है। इस निश्चय में ही रमण करना है। बरोबर बाबा ने जिसमें पधरामणी किया है वा अवतार लिया है वह बाप खुद कहते हैं मैं इनके बहुत जन्मों के अन्त के जन्म के भी अन्त में आता हूँ। बच्चों को समझाया गया है यह है सर्व शास्त्रमई शिरोमणी गीता का ज्ञान। श्रीमत अर्थात् श्रेष्ठ मत। श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ ऊंच ते ऊंच मत है भगवान की। जिसकी ही श्रेष्ठ मत से मनुष्य से देवता बनते हैं। तुम आते ही इसलिये हो। बाप भी खुद कहते हैं, मैं आता ही हूँ तुमको भ्रष्टाचारी विकारी मत से श्रेष्ठाचारी निर्विकारी मत वाले देवी–देवता बनाने। मनुष्य से देवता बनने का अर्थ भी समझना है। विकारी मनुष्य से निर्विकारी देवता बनाने बाप ही आते हैं। सतयुग में मनुष्य ही रहते हैं; परन्तु दैवीगुण वाले। अभी कलियुग में हैं आसुरी गुण वाले। है सारी मनुष्य सृष्टि; परन्तु वह है ईश्वरी बुद्धि, यह है आसुरी बुद्धि। वहां है ज्ञान, यहां है भक्ति। ज्ञान और भक्ति अलग है ना। भक्ति के पुस्तक कितनी और ज्ञान की पुस्तक कितनी है। ज्ञान का सागर बाप है उनका पुस्तक तो एक ही होना चाहिए। जो भी धर्मस्थापन करते हैं उनकी पुस्तक एक ही होना चाहिए। इसको रीलिजीयस बुक कहा जाता है। पहला2 रीलिजीयस बुक है गीता। श्रीमद्भगवद्गीता। यह भी बच्चे जानते हैं पहला2 आदि सनातन देवी देवता धर्म है न कि हिन्दू धर्म। मनुष्य समझते हैं गीता से हिन्दू धर्म स्थापन हुआ और गीता गाई है कृष्ण ने। कोई से भी पूछो, कहेंगे परम्परा से यह कृष्ण ने गाई है। कोई शास्त्र में शिव भगवानुवाच तो है नहीं। श्रीमत कृष्ण भगवानुवाच लिख दिया है। जो गीता पढ़े हुये होंगे उनको सहज समझ में आ जावेगा। अभी तुम समझते हो इस गीता ज्ञान से ही मनुष्य से देवता बने हैं। जो अभी बाप तुमको दे रहे हैं। राजयोग सिखला रहे हैं। पवित्रता भी सिखला रहे हैं जोर से। अपवित्रता काम महाशत्रु है। इस शत्रु द्वारा ही तुमने हार खाई है। अभी फिर इन पर जीत पाने से तुम जगत का मालिक देवता बन जावेंगे। यह तो बहुत सहज है। बेहद का बाप बैठ इन द्वारा तुमको पढ़ाते हैं। वह है सभी आत्माओं का बेहद का बाप। यह फिर है बेहद का बाप मनुष्यों का। नाम ही है प्रजापिता ब्रह्मा। तुम कोई से भी पूछेंगे ब्रह्मा के बाप का नाम बताओ। तो मुंझ पड़ेंगे। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर यह है क्रिश्चयन। इन तीनों का बाप कोई तो होगा ना। तुम दिखलाते हो इन तीनों का बाप है निराकार। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को सूक्ष्मवतन की देवताएं दिखलाते हैं। इनके ऊपर है शिव। बच्चे जानते हैं शिवबाबा के बच्चे जो भी आत्माएं हैं उन्होंने शरीर धारण किया है। वह तो सदैव निराकार परमपिता परमात्मा है। बच्चों को मालूम हुआ है निराकार परमपिता परमात्मा के हम बच्चे हैं। आत्मा शरीर द्वारा कहती है परमपिता। कितनी सहज बात है। इसको कहा जाता है अलफ, बे। पढ़ाते कौन हैं? गीता का ज्ञान किसने सुनाया? बाप ने समझाया है श्रीकृष्ण को भगवान नहीं कहा जाता। वह तो देहधारी है ना। ताज आदि है ना उन पर शिव तो है निराकार। उन पर कोई ताज आदि है नहीं। वही ज्ञान का सागर है। बाप ने समझाया है मैं बीजरूप चैतन्य हूं। तुम भी चैतन्य हो ना। सभी झाड़ों के आदि, मध्य, अन्त को तुम जानते हो। भल तुम माली नहीं हो; परन्तु समझ सकते हो कैसे बीज डालते हैं उनसे झाड़ निकलता है। वह है जड़। यह है चैतन्य। आत्मा को चैतन्य कहा जाता है। तुम्हारी आत्मा में ज्ञान है और कोई की आत्मा में ज्ञान होता नहीं। तो बाप चैतन्य मनुष्य सृष्टि का बीज रूप है। झाड़ भी मनुष्यों का होगा। बाप समझाते हैं इस मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ का मैं बीज हूं। यह चैतन्य क्रिश्चयन है। बीज और क्रिश्चयन में फर्क तो है ना। आम का बीज होता है वह डालने से आम निकलते हैं। फिर झाड़ कितना बड़ा होता है। वैसे मनुष्य के बीज से भी मनुष्य कितने बड़े होते हैं। वह स(भी) है जड़ बीज। ऐसे नहीं जड बीज में कोई ज्ञान है। यह तो चैतन्य बीज रूप है। उनमें नालेज है सारी सृष्टि रूपी झाड़ का। उनमें ज्ञान है कैसे उत्पत्ति पालना फिर विनाश होता है। झाड़ तो बहुत बड़ा है। वह खलास हो दूसरा नया कैसे खड़ा होता है यह है गुप्त। तुमको ज्ञान भी गुप्त मिलता है। बाप भी गुप्त आये हैं।

जानते हो यह कलम लग रहा है। अभी तो सभी पतित बन गये हैं। अच्छा, बीज से पहले2 नम्बर में जो पत्ता निकला वह कौन था? सतयुग का पहला पत्ता तो कृष्ण को ही कहेंगे, ल0ना0 को नहीं। नया पत्ता छोटा होता है। पीछे बड़ा होता है। तो इस बीज की कितनी महिमा है। यह तो चैतन्य है ना। फिर पत्ते दूसरे भी निकलते हैं। उन्हों की महिमा तो होती है ना। अभी तुम दैवी बन रहे हो। मूल बात है ही यह कि हमको दैवीगुण धारण करनी है। इन जैसा बनना है। चित्र भी हैं। यह चित्र न होते तो बुद्धि में ज्ञान हो नहीं सकता। जैसे जानवर होते हैं। यह चित्र बहुत काम में आते हैं। भक्ति मार्ग में इन चित्रों की पूजा होती है और ज्ञान मार्ग में इन चित्रों से तुमको ज्ञान मिलता है कि ऐसा बनना है। भक्ति मार्ग में ऐसे नहीं समझते कि हमको ऐसा बनना है। भक्ति मार्ग में मंदिर आदि कितने बनते हैं। सबसे जास्ती मंदिर किसके होंगे? जरूर शिवबाबा के होंगे। जो बीज रूप है। फिर उसके बाद क्रिश्चयन के मंदिर होंगे। पहली क्रिश्चयन यह (ल0ना0) हैं। शिव (के) बाद में इनकी पूजा सबसे जास्ती होती है। माताएं तो ज्ञान देती हैं। उनकी पूजा नहीं। वह तो पढ़ती हैं ना। बाप तुमको पढ़ाते हैं, तुम किसकी पूजा नहीं करते हो। पढ़ाने वाले की अभी पूजा नहीं कर सकते हैं। जब तुम पढ़कर फिर अनपढ़ बनेंगे तब फिर पूजा करेंगे। अभी तुम सो देवी देवता बनते हो। तुम जानते हो जो हमको ऐसा बनाते हैं उनकी पूजा होगी फिर हमारी भी पूजा होगी नम्बरवार। फिर गिरते–2 5तत्वों की भी पूजा करने लग पड़ते हैं। शरीर 5तत्वों का है। 5तत्वों की पूजा करो या शरीर की करो बात एक हो जाती। यह तो ज्ञान बुद्धि में है यह ल0ना0 सारे विश्व के मालिक थे। इन देवी देवताओं का राज्य नई सृष्टि पर था; परन्तु वह कब था यह नहीं जानते। लाखों वर्ष कह देते हैं। अभी लाखों वर्ष की तो बात कब किसकी स्मृति में रह न सके। अभी तुमको स्मृति है। हम आज से 5000 वर्ष पहले आदि सनातन देवी–देवता धर्म के थे। देवता धर्म वाले फिर और धर्मों में कन्वर्ट हुये हैं। हिन्दू धर्म कह देते हैं। पतित होने कारण हिन्दू कहते हैं। अपन को देवी–देवता कहना शोभता नहीं है; क्योंकि पवित्र नहीं हैं। अपवित्र को देवी–देवता नहीं कह सकते; परन्तु मनुष्यों में ज्ञान नहीं है तो देवी का ..... टाइटिल देते रहते हैं। कहां वह पावन पूज्य देवताएँ कहां यह पतित! पावन देवियों की पूजा करते हैं तो जरूर अपवित्र हैं। इसलिये पवित्र के आगे माथा झुकाना पड़ता है। भारत में खास कन्याओं को कितना नमन करते हैं। कुमारों को नहीं करते हैं। फिमेल को नमन करते हैं, मेल को क्यों नहीं? क्योंकि इस समय ज्ञान–अमृत भी पहले माताओं को मिलता है। बाप इनमें प्रवेश करते हैं। यह भी समझते हो बरोबर यह ज्ञान की बड़ी नदी है। ज्ञान नदी भी है फिर पुरूष भी है। यह है सबसे बड़ी नदी। ब्रह्मपुत्री नदी है सबसे बड़ी नदी। जो कलकत्ते तरफ़ सागर में जाकर मिलती है। मेला भी वहां लगता है; परन्तु उनको यह पता नहीं है कि यह आत्माओं और परमात्मा का मेला है। वह तो पानी की नदी है जिस पर नाम ब्रह्मपुत्री रखा है। उन्होंने तो ब्रह्म ईश्वर को कहते हैं। इसलिये ब्रह्मपुत्री को बहुत पावन समझते हैं। बड़ी नदी है। तो पवित्र भी वह होंगी। पतित–पावन वास्तव में गंगा को नहीं कहा जाता। ब्रह्मापुत्री को कहा जावे। मेला भी उनका लगता है। यह भी सागर और ब्रह्मानदी का मेल है। बाप कहते हैं ना मैं फिमेल हूँ जिस द्वारा एडॉप्शन होते हैं। यह बहुत गुह्य बातें समझने की हैं। जो फिर प्रायः लोप हो जाते हैं। फिर बाद में मनुष्यों ने बैठ शास्त्र आदि बनाई है। सतयुग में तो शास्त्र आदि हो न सके। जो धर्म स्थापन करते हैं उनके नम्बरवार शास्त्र भी निकलते जाते हैं। पहले हाथ के लिखे हुये शास्त्र फिर मनुष्यों ने बैठ किताब बनाया। छपाई की है। संस्कृत, श्लोक आदि है नहीं। यह तो बिल्कुल सहज बात भगवानुवाच मैं तुमको राजयोग सिखाता हूँ। शास्त्र आदि कुछ भी न रहेंगे। फिर यह दुनियां ही खलास हो जावेगी। फिर भक्तिमार्ग में यह शास्त्र आदि बनते हैं। ज्ञानमार्ग में शास्त्र होते ही नहीं। मनुष्य समझते हैं यह शास्त्र (परम्)परा से चली आती है। ज्ञान तो कुछ है नहीं। कल्प की आयु ही लाखों वर्ष दे दी है, तो इसलिये परम्परा कह देते हैं। इसको कहा जाता है अज्ञान। अंधियारा। अभी तुम बच्चों को यह बेहद की पढ़ाई मिलती है। जिससे तुम आदि, मध्य, अन्त का राज़ सहज समझा सकते हो। तुमको इन देवताओं की हिस्ट्री–जागराफी का पूरा पता है।

वह पवित्र प्रवृत्ति मार्ग वाले पूज्य थे। अभी पुजारी पतित हैं। सतयुग में पवित्र प्रवृत्ति मार्ग। यहां कलियुग में है अपवित्र प्रवृत्ति मार्ग। फिर बाद में निवृत्ति मार्ग होता है। वह भी ड्रामा में है। जिसको सन्यास धर्म कहते हैं। जंगल में जाते हैं। वह है हद का सन्यास। रहते तो इसी पुरानी दुनियां में हैं ना। अभी तुम जानते हो हम संगमयुग पर हैं। फिर नई दुनियां में जावेंगे। उनको तो नई और पुरानी दुनियां का पता ही नहीं। तुमको पूरा मालूम है। तिथि, तारीख, सेकण्ड्स सहित। कोई बच्चे ने हिसाब निकाल भेजा था सात वर्ष में इतने सेकण्ड्स हैं। वह लोग तो कल्प की आयु ही लाखों वर्ष कह देते हैं। हम 5000 वर्ष कहते हैं। उनका पूरा हिसाब निकाल सकते हैं। लाखों वर्ष की बात तो कोई याद भी न रहे। तो वह सभी हैं भक्ति मार्ग के गपोड़े। उनमें भी सबसे बड़ा गपोड़ा है ईश्वर को सर्वव्यापी कहना। अज्ञान में मनुष्य बिल्कुल ही अंधे हो जाते हैं। इन आँखों से अंधे नहीं। ज्ञान का तीसरा नेत्र नहीं है। इसलिये सभी अंधे के औलाद अंधे हैं। तुमको अभी ज्ञान का नेत्र मिला है। तुम सृष्टि के आदि, मध्य, अन्त को जानते हो। लाखों वर्ष की बात हो तो जान कैसे सकते। अभी तुम समझते हो बाप क्या है, कैसे आते हैं, क्या कर्तव्य करते हैं। तुम सभी के ऑक्युपेशन को, जन्मपत्री को जानते हो। बाकी झाड़ के पत्ते तो ढेर होते हैं। वह गिनती थोड़े ही कर सकते हैं। इस बेहद सृष्टि रूपी झाड़ के कितने ढेर पत्ते हैं। 5000 वर्ष में तुम कहेंगे 500 करोड़ हैं। 500 करोड़ कोट है। कोटों में कोई जानते हैं। 5000 वर्ष में 500 करोड़ मनुष्य हुये हैं तो लाखों वर्ष में कितने अनगिनत मनुष्य हो जावेंगे। बहुत हो जावेंगे। भक्तिमार्ग में दिखाते हैं, कहां लिखा हुआ है सतयुग इतने वर्ष का है, त्रेता इतने वर्ष का द्वापर इतने वर्ष का है। तो बाप बैठ सभी राज समझाते हैं तुम बच्चों को। आम का बीज देखने से आम का ..... सामने आ जावेगा। अभी मनुष्य सृष्टि का बीज रूप तुम्हारे सामने हैं। तुमको बैठ झाड़ का राज़ समझाते हैं; क्योंकि चैतन्य है। बताते हैं हमारा यह उल्टा झाड़ है। उनमें 500 करोड़ मनुष्य पार्टधारी हैं। तुम समझ सकते हो जो भी इस दुनियां में हैं जड़ वा चैतन्य सभी हूबहू रिपीट करेंगे। अभी कितना वृद्धि को पाते रहते हैं। सतयुग में इतना नहीं होते। कहते हैं फलानी चीज ऑस्ट्रेलिया से, जपान से आई है। सतयुग में ऑस्ट्रेलिया जपान आदि थोड़े ही थे। ड्रामा अनुसार वहां की चीज़ यहां आती है। अमेरीका से गेहूँ आते हैं। सतयुग में कहां से आवेंगे थोड़े ही। वहां तो है एक ही धर्म। यहां धर्म वृद्धि को पाते रहते हैं तो इनके साथ चीजें भी निकलती जाती हैं। सतयुग में कहां से मंगानी नहीं पड़ेगी। अभी तो देखो कहां2 से मंगाते हैं। मनुष्य वृद्धि को पाते गये हैं। तो नई2 चीज़ें भी वृद्धि को पाती गई हैं। बारूद आदि पहले था क्या? यह सभी चीजें पीछे निकली हैं। सतयुग में तो कोई अप्राप्त वस्तु होती नहीं। वहां की हर चीज़ सतोप्रधान अच्छी होती है। मनुष्य ही सतोप्रधान हैं। मनुष्य अच्छे हैं तो सामग्री भी अच्छी है, मनुष्य बुरे हैं तो सामग्री भी नुकसानकारक है। साइंस के मुख्य चीजें हैं एटॉमिक बॉम्बस, जिससे ही इतना सारा विनाश होता है। कैसे बनाते होंगे! बनाने वाली आत्मा में पहले से ही ड्रामा अनुसार ज्ञान होगा। जब समय है आता (है) तब उनमें वह ज्ञान आता है। जिसमें साइंस होगी वही वह काम करेंगे और दूसरों को सीखावेंगे। कल्प2 जो पार्ट बजाया है वही फिर बजाते हैं। अभी तुम नॉलेजफुल बनते हो। इनसे जास्ती नॉलेज होती ही नहीं। तुम इस नालेज से देवता बनते हो। इनसे ऊँची कोई नॉलेज है नहीं। वह है माया का नालेज जिससे विनाश होता है। वह लोग मून में जाते हैं, खोजते हैं, तुम्हारे लिये कोई नई बात नहीं। यह सभी माया का पॉम्प है। बहुत शो करते हैं। अति डीपनेस में जाते हैं। बहुत बुद्धि लड़ाते हैं कुछ कमाल कर दिखावें। बहुत कमाल करने से नुक़सान हो जाता है। यह भी है बना बनाया ड्रामा। उन्हों के ब्रेन में विनाश ही ख्यालात में आती है। क्या–2 बनाते रहते हैं! बनाने वाले जानते हैं इनसे यह विनाश होगा। ट्राय करते रहते हैं। इस समय सबसे जास्ती जोर यह दो हैं। दो बिल्ले लड़े, मक्खन तीसरा खा गया। कहानी तो पाई पैसे की है। खेल कितना बड़ा है। नाम इन्हों का ही बाला है। इन द्वारा ही विनाश होगा। क्रिश्चयन लोग समझते हैं पैराडाइज था तो हम नहीं थे। इस्लामी, बौद्धी भी नहीं थे। पहले2 डीटी डिनायस्टी थी। क्रिश्चयन लोगों की समझ अच्छी है। भारतवासी फिर

कहते देवी–देवता धर्म लाखों वर्ष पहले था। तो बुद्धु ठहरे ना। अभी तुम जानते हो। नम्बरवार तो होते ही हैं। पढ़ाई है ना। जो जास्ती समझाते हैं वह अच्छा समझते हैं। कम समझाने वाले कम समझते हैं। फिर समझाने वालों में भी माया आती है। आज समझाते रहते हैं कल भागन्ती हो जाते। शादी आदि कर चट हो जाते। फिर आस्ते2 ज्ञान भी खत्म हो जाता। तो बाप सभी बातें समझाते रहते हैं। बाप बहुत सहज रास्ता बताते हैं। मुझे याद करो तो तुम सोने की बर्तन बन जावेंगे। इनमें यह धारणा अच्छी होगी। सोने का बर्तन होगा ही बाप की याद से। याद की यात्रा से ही पाप कट जावेंगे। मुरली नहीं सुनते तो ज्ञान रफू चक्र हो जाती है। अच्छे–2 महारथी जिनको समझते थे उन्हों को भी अहंकार आ गया, अवज्ञा कर दी सिखलाने वालों की। तो फिर वह ज्ञान गुम हो जावेगा। ऐसे बहुत अच्छे2 चले गये। शादी करने का विचार आया तो माया ने पकड़ा। गज को ग्राह ने पकड़ा। शादी माना ही विकार में जाना। फिर उतना ऊँच पद नहीं पावेंगे। फिर इसके लिये छोटी महीन चींटी का मिसाल देते हैं। वह गिरता है फिर चढ़ता है। यहां भी विकार में गिरते हैं फिर चढ़ने की कोशिश करते हैं। बाप तो रहम दिल होता है फिर भी युक्ति बतावेंगे चढ़ने की। तोबा भी भरते हैं फिर भी गिर पड़ते हैं। लिखते हैं काला मुँह हो गया। घड़ी2 गिरते2 फिर खत्म हो जाते। फिर पद बहुत कम पाते हैं। बाप तो सभी बातें समझाते रहते हैं। समझाते ही रहेंगे। तुम देखते रहेंगे। अच्छे2 भी गिरते रहते हैं। अवस्था से मालूम पड़ता है। समाचार आते हैं बाबा फलाना आता ही नहीं है। कहता है फुर्सत नहीं। जरूर कोई के संग में खराब हुआ है। बाबा नाम नहीं लेते, नहीं तो गुस्सा आ जाता। हमारा नाम बदनाम हो गया है अभी हम कहाँ जावें। स्थापना तो ऐसे ही होनी है। जैसे कल्प2 हुई है। ज़रा भी फर्क नहीं पड़ सकता। कदम कदम पर सावधानी है तो पदम है, नहीं तो खाखे खोखे। अच्छा, आज भोग है। यह भोग लगाने की भी सिर्फ़ सर्विस है, बस। बाकी बैकुण्ठ में जाना, देवताओं आदि का सा0 करना वह सभी फालतू है। यह सभी माया है। फिर जो बातें बतावेंगे वह माया वस। डायरेक्शन अनुसार सिर्फ़ भोग ही लगाकर आना है 5 मिनट में। बाबा कब2 मिनट भी कहेंगे। यह भोग आदि भी कोई समय बन्द हो जावेगा। बाप दादा की अवज्ञा का फल बहुत कड़ा है। गालियां तो आधा कल्प देते आये हो अभी बाप सम्मुख आये हैं उनको भी पूरा न पहचाना तो बाकी क्या सीखेंगे। इसमें बहुत महीन बुद्धि चाहिए। बाप इस रथ द्वारा कहते हैं मुझे याद करो। मैं पतित–पावन हूँ। गायन भी है तुम्हीं से खाऊँ, तुम्हीं से बैठूँ। तो जरूर यहाँ रथ में होगा ना। ऊपर में कैसे होगा। बहुत ऐसे हैं जिनको यह ख्याल है बाप तो ऊपर में बैठा है। समझ और बेसमझ किसको कहा जाता है यह भी तुम बच्चे समझते हो। यह जो बैज है इसमें सारा ज्ञान भरा हुआ है। ऊपर में है ऊंच ते ऊंच बाप समझू। ब्रह्मा बेसमझ दिवाला मार बैठा हुआ है। फिर समझदार बनने से यह विष्णु बन जाते हैं। ऊपर में अकेला शिवबाबा। यह है बेगर और यह प्रिन्स। कितने जेवर आदि पड़े हैं। सारा ज्ञान इस बैज में है। त्रिमूर्ति का चित्र है; परन्तु शिवबाबा का नाम निकाल दिया है। तो भारत कैसा कर्जदार बन गया है। बनाने वालों की भूलने से यह हाल हुआ है, फिर उनको याद करने से यह बन जावेंगे। ऊंच ते ऊंच बाप को उड़ाकर ठिक्कर–भित्तर में डाल दिया है। उनको उड़ाते ही भारत की यह हाल हुई है। बाप भारत में ही आते हैं जो जय–जयकार हो जाते हैं। यह लास्ट वाला सो फिर नम्बर फर्स्ट वाला बनते हैं। इस बैज में बहुत कुछ भरा हुआ है; परन्तु किसकी बुद्धि में बैठता नहीं है। कोई पूछे यह क्या है बोलो, विश्व में सुख–शान्ति कैसे होती है इससे समझाया जाता है। सारा राज़ इनमें है। सारी गीता का सागर इसमें है। ऐसी फराक दिल बुद्धि कोई की नहीं जो यह बनाने का ख्याल करे। वह झूठी गीताएँ कितने करोड़ हैं। यह बैज है सच्ची गीता। तो सच्ची गीताएँ कितनी होनी चाहिए; परन्तु किसकी बुद्धि में आता नहीं है। भिन्न2 वैराईटी चाहिए ना। बड़े आदमी को हल्की चीज पहनने में लज्जा आवेगी। अच्छी चीज देख दिल खुश होगा; परन्तु अभी तक ऐसा कोई बुद्धिवान निकला नहीं है। अच्छा, मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग और नमस्ते।